गाज से बचा बेन

मार्ग्रेट नाश

हिन्दी: छाया

गाज से बचा बेन

मार्ग्रेट नाश
हिन्दी: छाया

किताब के बारे में .....

यह कहानी इतिहास की सच्ची घटनाओं पर आधारित है लेकिन इस कहानी के कुछ पात्र काल्पनिक हैं। द्वितीय विश्व युद्ध 1 सितम्बर 1939 को शुरू हो गया था।

गाज (बिल्ट्ज) की शुरूवात (जिसका जर्मन में अर्थ होता है 'लाइटनिंग') 7 सितम्बर 1940 को हुई जब जर्मनी ने ब्रिटेन पर प्रतिदिन बम गिराने का निश्चय किया। तब बहुत सारे बच्चों को ग्रामीण क्षेत्रों की तरफ़ भेजकर बमबारी के खतरे से बचाया गया।

शत्रुओं के बमों से लदे हुए हवाई जहाज लंदन और अन्य शहरों के बहुत ही पास उड़ रहे थे, ब्रिटिश आर्मी ने उन्हें रोकने के लिए बैराज गुब्बारे लगाए। सन् 1940 में आकाश में 1400 गुब्बारे उड़ रहे थे लेकिन भयंकर तूफान आने पर वे नीचे गिर सकते थे।

(बैराज गुब्बारे एक प्रकार के अंडाकार गुब्बारे होते थे, जो दुश्मन के नीची उड़ान भरते हुए हवाई जहाजों से किए जाने वाले आक्रमण की पहली लहर से बचाव के लिए प्रयोग में लाए जाते थे। वे जहाजों और उनके नीचे के सैनिकों को दुश्मन के विमानों के हमलों से महत्वपूर्ण सुरक्षा प्रदान करते थे।)

धूम ! धड़ाम !

रोज़ रात को हवाई जहाजों से लंदन में बम गिराए जाते थे।

“तुम्हें कहीं गाँव की तरफ़ सुरक्षित ज़गह पर चले जाना चाहिए,” बेन की माँ ने कहा।

इसलिए उसने बेन को अपनी सहेली श्रीमती पौपल के साथ एक फार्म पर रहने के लिए भेज दिया।

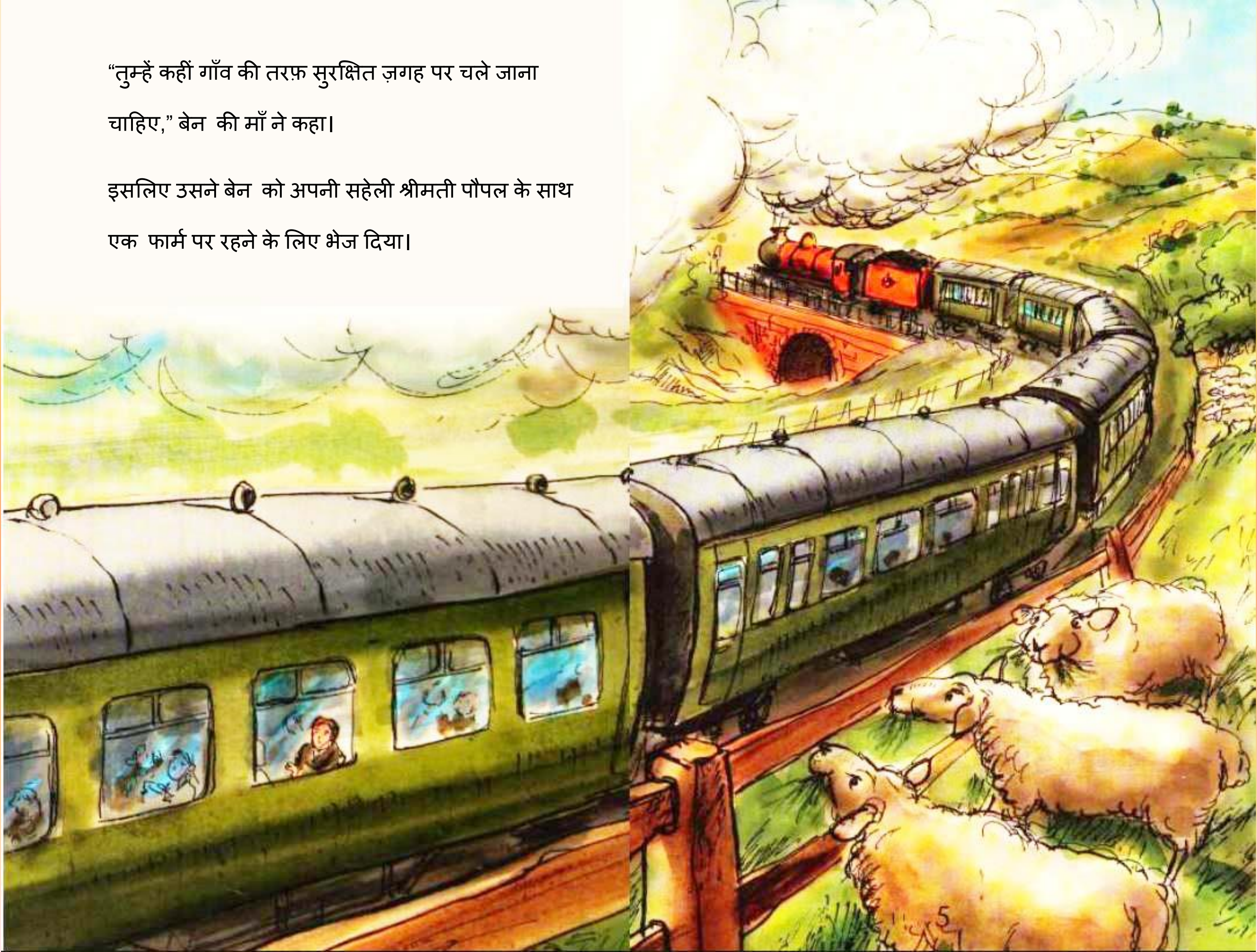

"तुम चिंता मत करो बेन, यहाँ एकदम शांति है। यहाँ कभी कुछ नहीं होता है," श्रीमती पौपल ने बेन से रेलवे स्टेशन पर मिलते ही कहा।

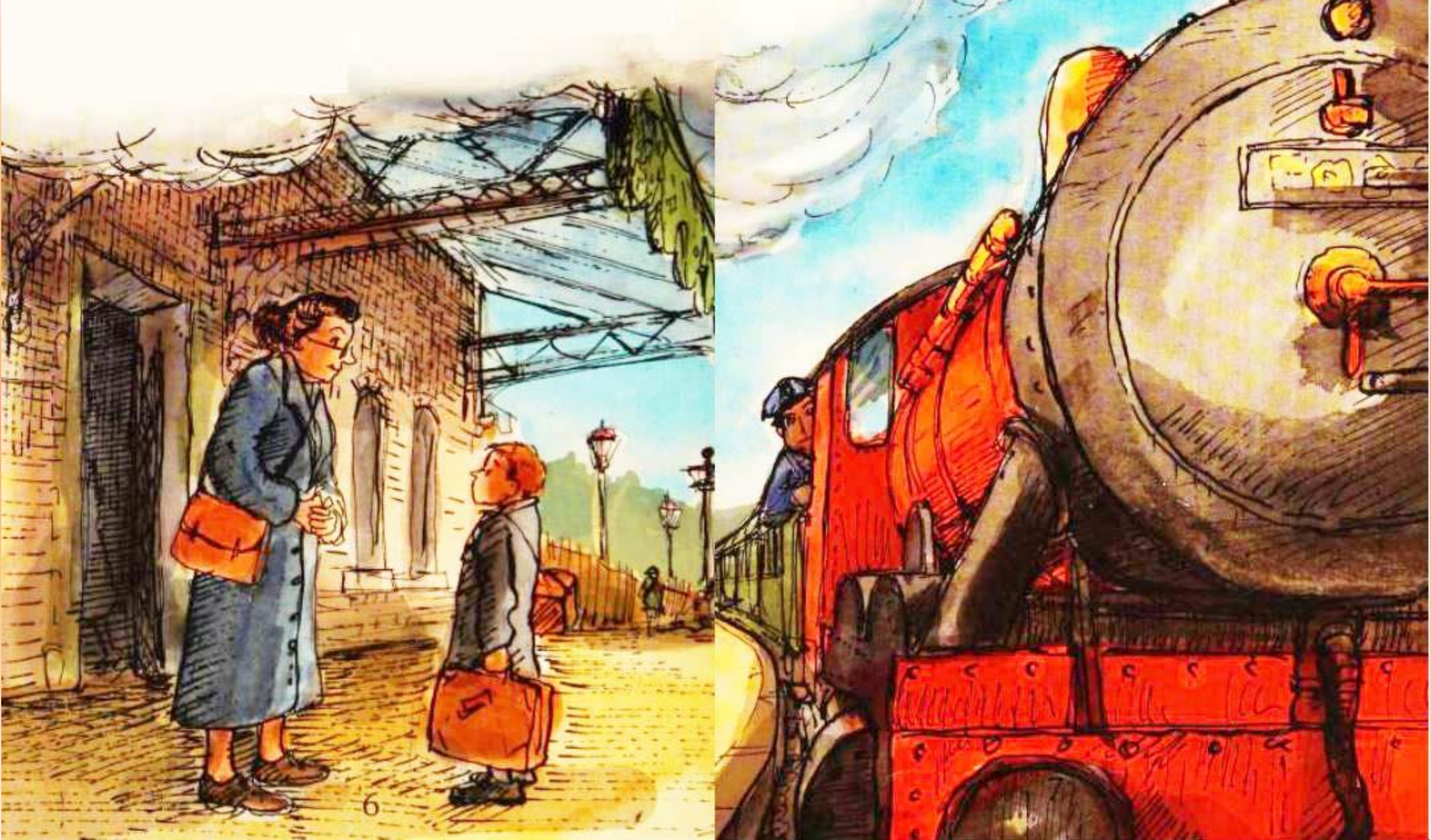

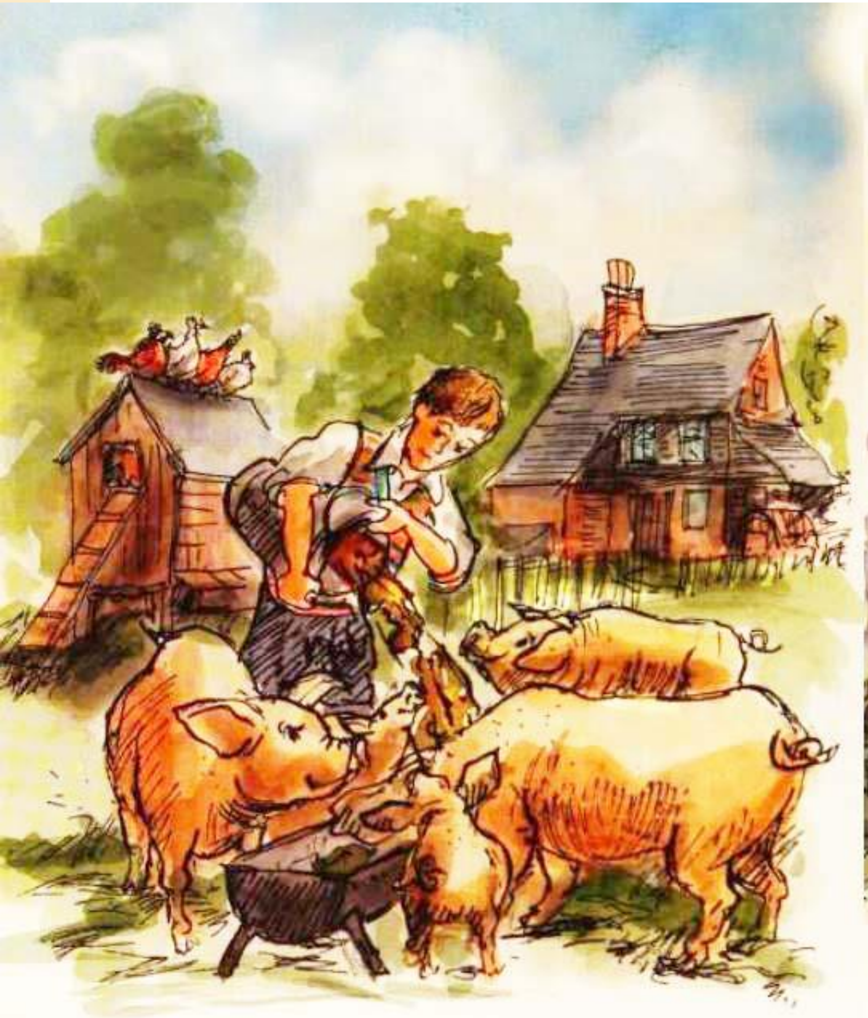

बेन फार्म पर रहकर श्रीमती पौपल की पूरी मदद करता था वह अंडे इकट्ठे करता और सूअरों को खाना भी खिलाता था।

वह श्रीमती पौपल के लिए रात को आग जलाने के लिए कोयले भी इकट्ठे करके लाता था।

बेन ने अपनी माँ को एक पत्र लिखा:

"........श्रीमती पौपल बहुत ही अच्छी हैं
लेकिन यहाँ का जीवन बहुत शांत है।
यहाँ पर टोनी नाम का एक और लड़का है
वो भी अपना घर छोड़ कर आया है।"

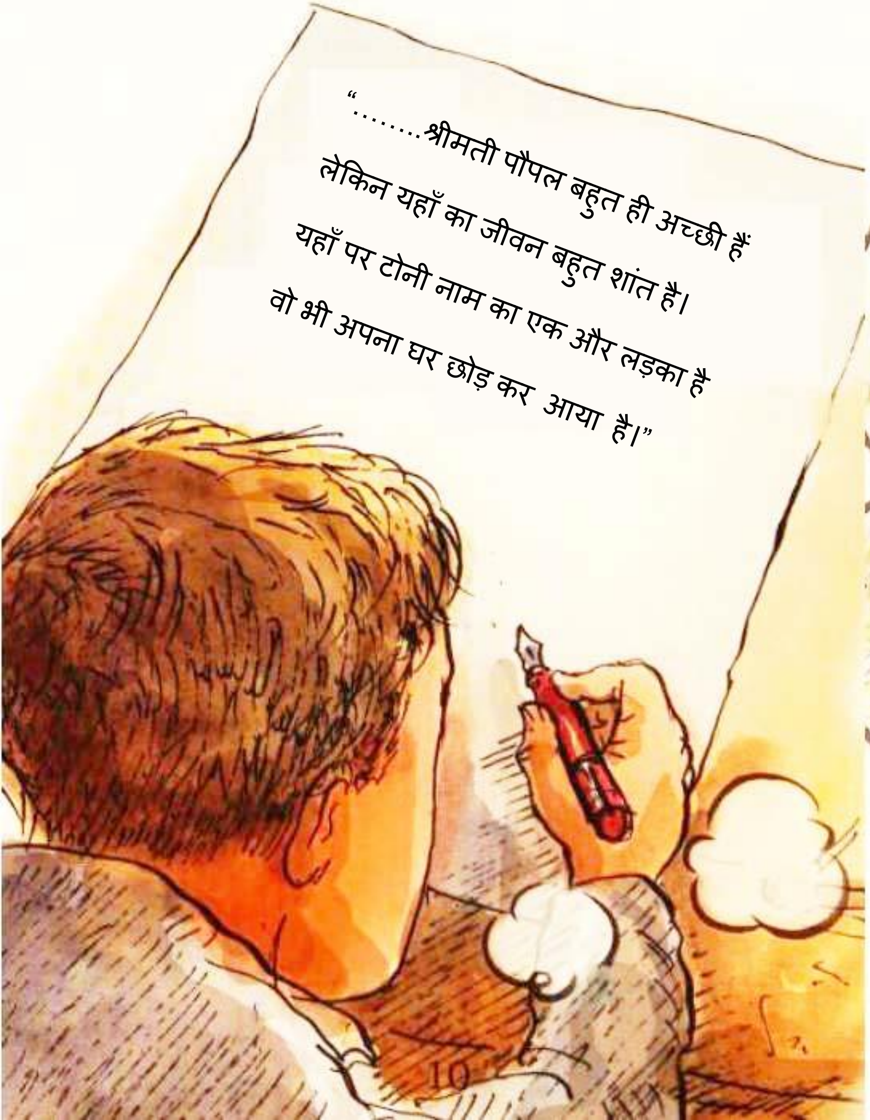

वहाँ पर स्कूल के कुछ बच्चे बेन और टोनी को हमेशा चिढ़ाते रहते थे।

“शहरी बाबू! शहरी बाबू!” वे चिल्लाते थे।

“शर्तिया, तुम्हें अँधेरे से डर लगता होगा।”

“लगी शर्त! हम नहीं डरते !” बेन ने कहा।

“ठीक है तो साबित करके दिखाओ। हिम्मत है तो आज रात को बाहर आओ,” उन्होंने चुनौती दी।

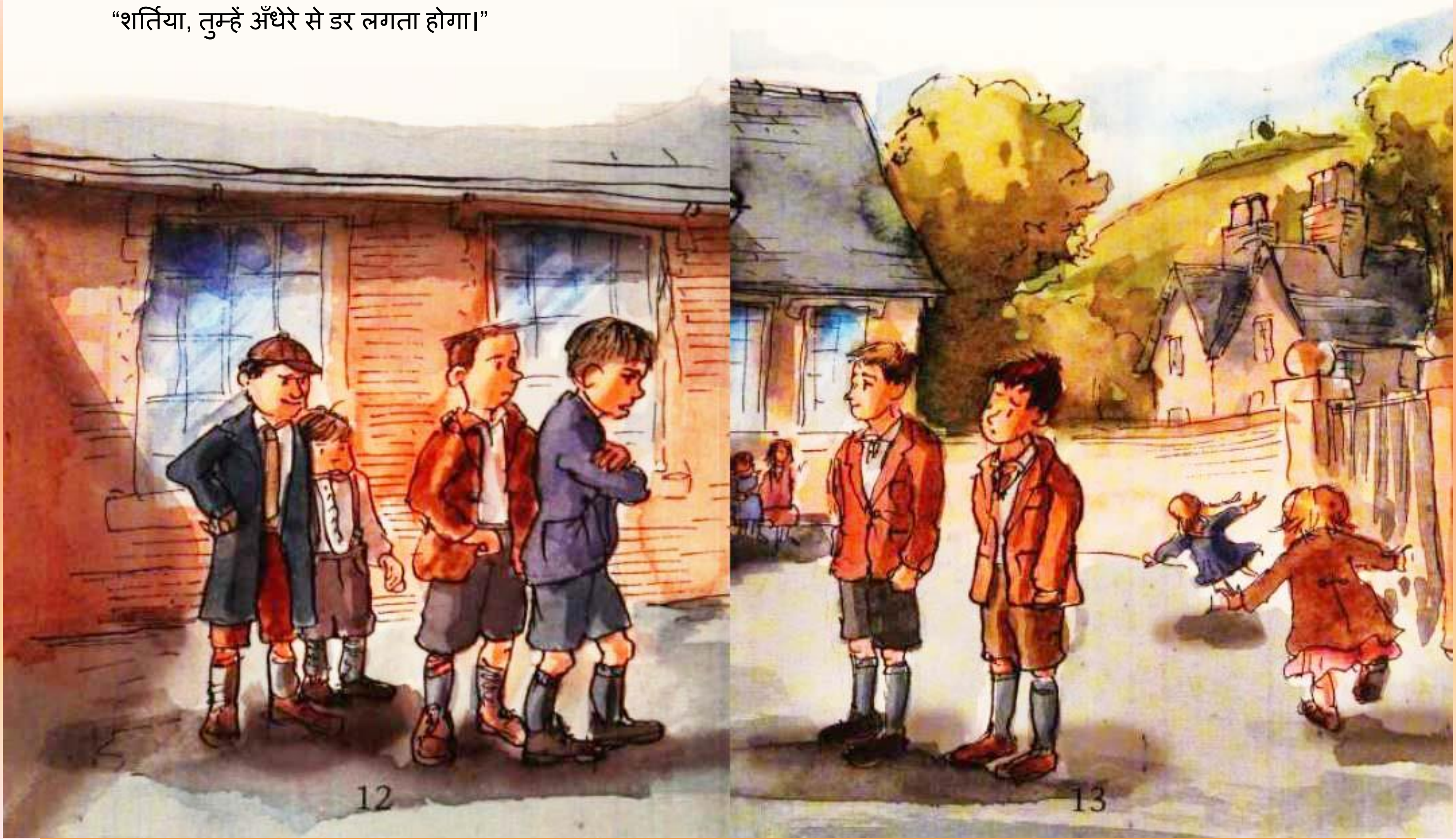

श्रीमती पौपल खुश नहीं थीं।

वह बेन को बाहर जाने देना नहीं चाहती थीं।

“अँधेरे में बाहर जाना खतरे से खाली नहीं है,”

उन्होंने बेन से कहा

अगले दिन स्कूल में वे सारे लड़के बेन के पास

आकर ज़ोरों से हँसे और खूब मज़ाक उड़ाया क्योंकि

बेन और टोनी रात को बाहर नहीं आए थे।

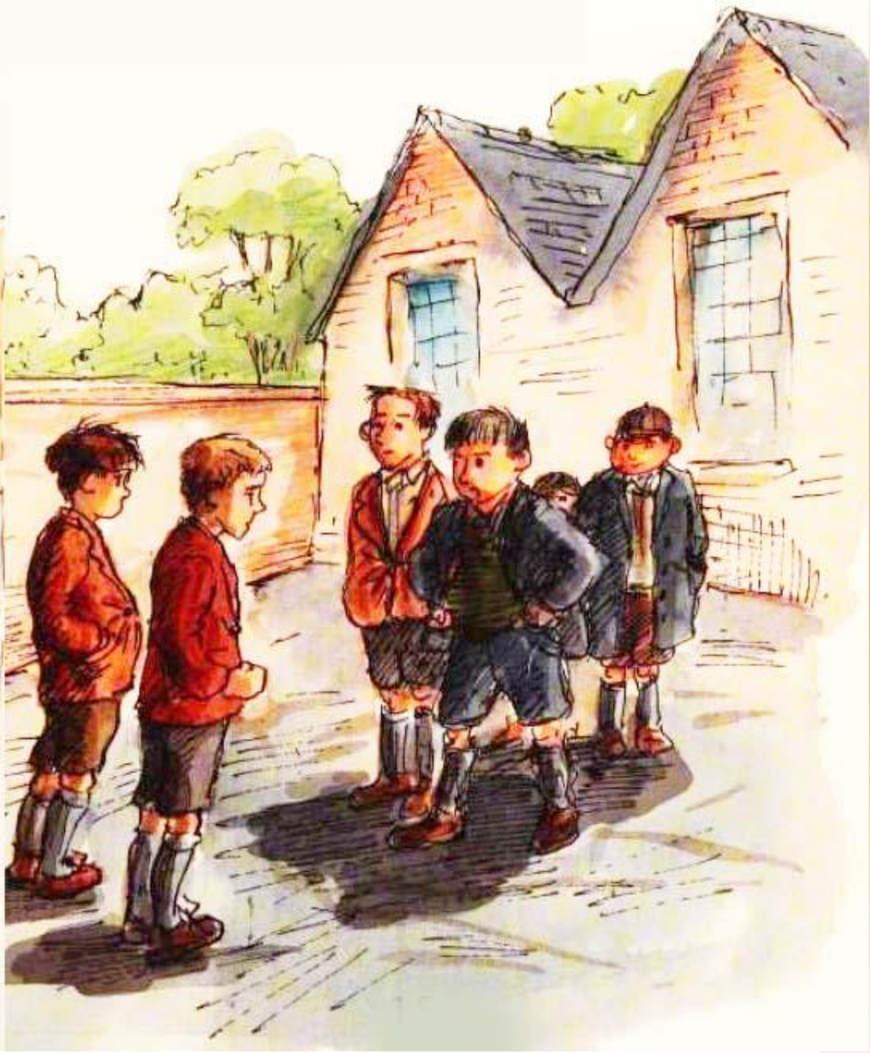

करीब एक हफ़्ते के बाद बहुत ही भयंकर तूफ़ान आया

जिसकी वज़ह से बेन और टोनी की नींद खुल गई।

श्रीमती पौपल अपने जानवरों को देखने

के लिए ज़ल्दी से बाहर की तरफ़ दौड़ीं।

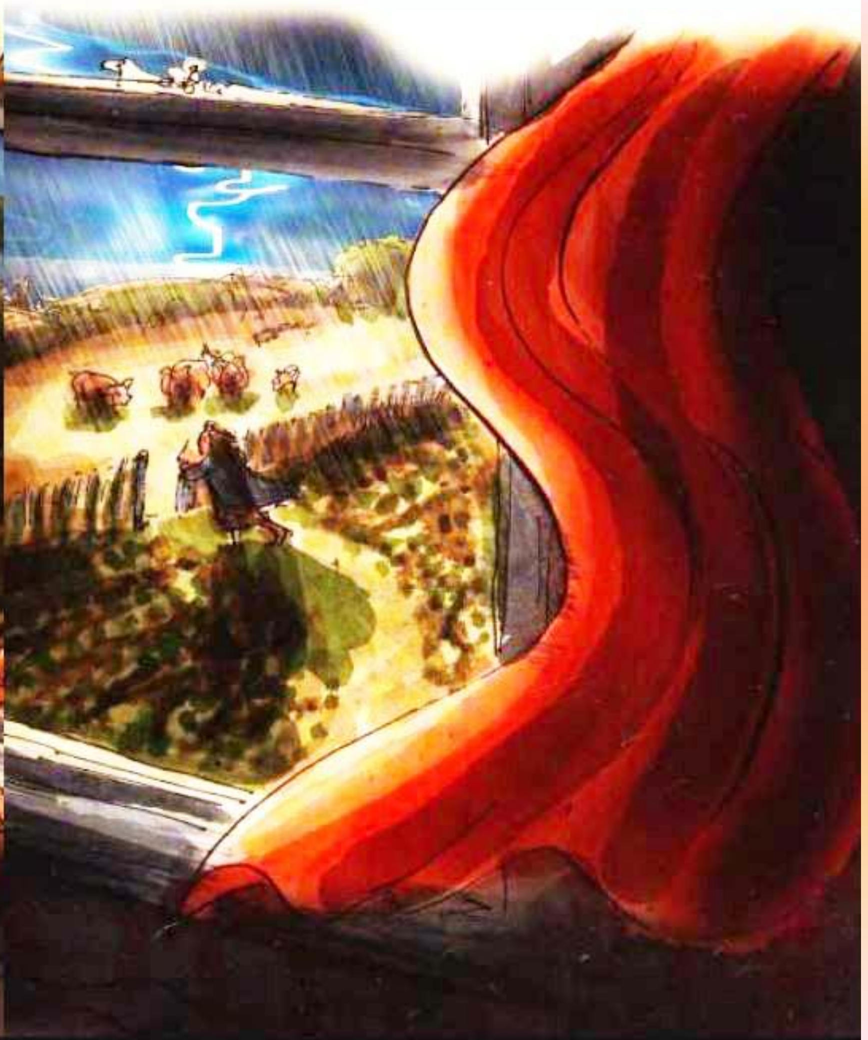

तभी धड़ाम! कुछ तो छत से टकराया।

मुर्गियाँ कुकड़ूकू करने लगीं, सूअर घुर-घुर करने लगे और कुत्ते भौंकने लगे।

“अगर कोई सैनिक बंदूक लेकर आ गया हो तो?” टोनी ने काँपते हुए कहा।

“चलो, चलकर देखते हैं” बेन ने कहा।

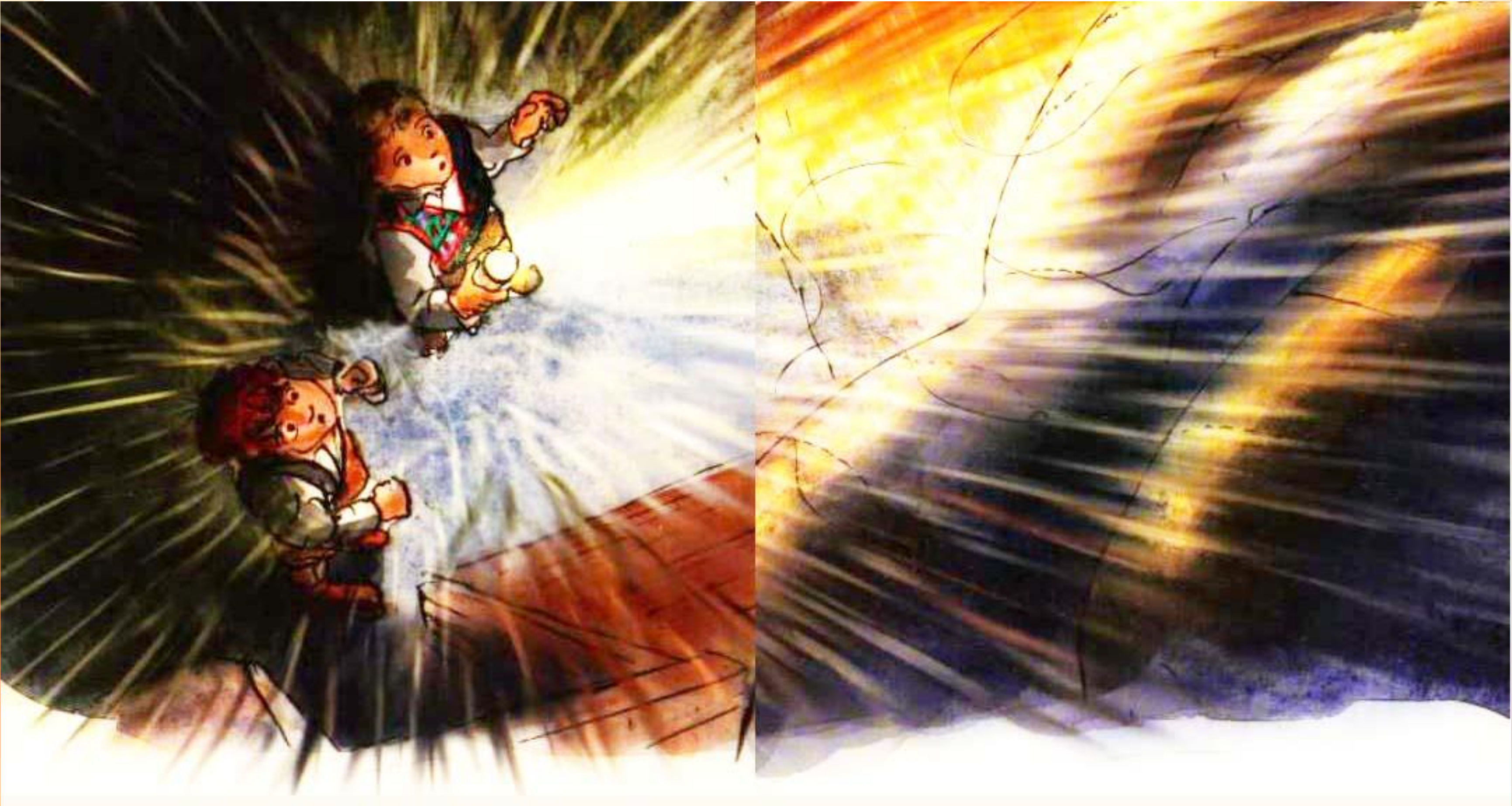

टोनी और बेन ने बाहर की ओर झाँका

लेकिन चारों तरफ़ घना अँधेरा ही था।

बेन ने लपककर टॉर्च उठाई और दरवाज़ा खोला।

कुछ तो विशालकाय चीज़ छत से नीचे की ओर लटकी थी।

बेन ने उसे देखने के लिए टॉर्च की रोशनी मारी।

“हे भगवान !” टोनी ने कहा, “ये क्या है?”

“अच्छा होगा अगर हम किसी की मदद लें,” बेन ने कहा।

“चलो किसी पुलिस वाले को ढूँढ़ते हैं। जल्दी करो!”

वे एक अँधेरी गली में दौड़ पड़े।

पानी से भरे गड्डों में गिरते-पड़ते, कूदते-फाँदते ....

फिर वे एक घोड़े से टकराते-टकराते बाल-बाल बचे।

तभी उन्होंने एक पुलिसमैन को देखा।

“बचाओ-बचाओ!” वे चिल्लाए।

“तुम दोनों यहाँ क्या कर रहे हो?” पुलिसवाले ने कहा।

“तुम्हें तो इस समय बिस्तर पर होना चाहिए था।”

“जल्दी! हमारी छत पर कुछ है - विस्फोट हो सकता है !”

टोनी ने कहा,

“शांत रहो लड़के, यहाँ कभी कुछ नहीं होता है,”

पुलिसवाले ने कहा।

जैसे ही पुलिसमैन घर में घुसा, उसके आश्चर्य का

ठिकाना न रहा।

“एक बैराज गुब्बारा!” वह चीखा।

“यह काम तो सेना के जवान करते हैं।”

“शाबाश लड़को!” एक सैनिक ने कहा।

“हम इन गुब्बारों को शत्रुओं द्वारा नीची उड़ान भरते जहाजों को रोकने और हमारे शहर पर बम गिराने से रोकने के लिए प्रयोग करते हैं।”
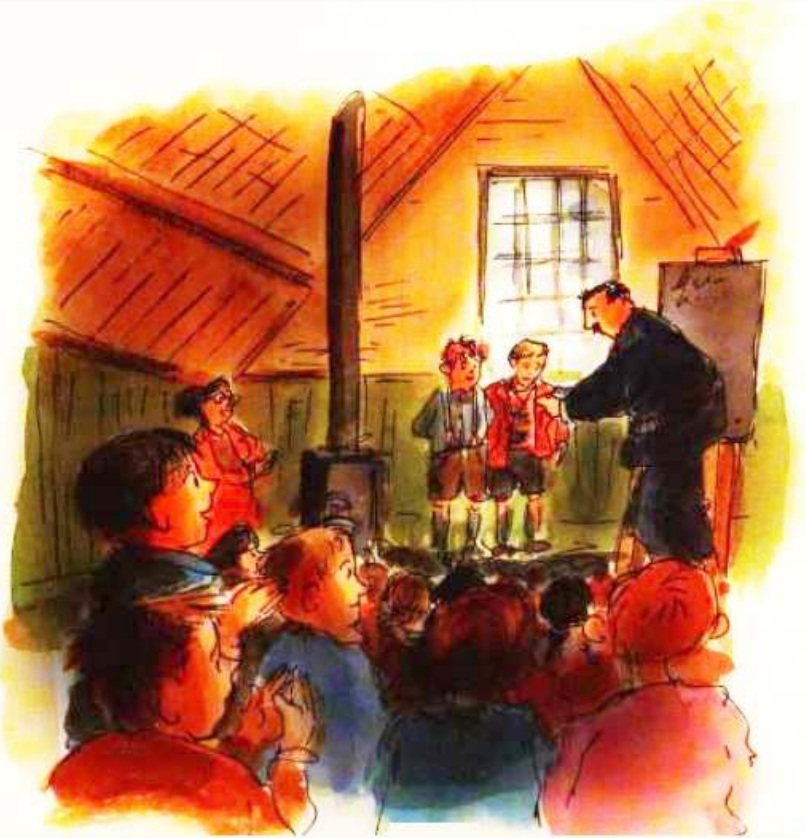
अगले दिन स्कूल में सभी लोगों को गुब्बारे की कहानी पता चल गई। सभी ने बेन और टोनी की जमकर तारीफ़ की। किसी ने भी अब यह नहीं कहा कि उन्हें अँधेरे से डर लगता है।